JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण है : खादी ग्रामोद्योग

डॉ. अनिल ठाकुर

विद्यालय अध्यापक (11-12)

anilthakurgodhanpur@gmail.com

सारांश

खादी ग्रामोद्योग भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने और ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर सृजित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह न केवल स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देता है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक समानता को भी बढ़ावा देता है। इस लेख में खादी ग्रामोद्योग के इतिहास, महत्व, वर्तमान स्थिति, चुनौतियों और भविष्य की संभावनाओं पर विस्तार से चर्चा की गई है। साथ ही, खादी ग्रामोद्योग को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक कदमों पर भी प्रकाश डाला गया है।

कूट शब्द: खादी, ग्रामोद्योग, ग्रामीण आर्थिक विकास, खादी कमीशन ।

प्रस्तावना

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहां की अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने और ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर सृजित करने के लिए खादी ग्रामोद्योग एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। खादी ग्रामोद्योग न केवल स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देता है, बल्कि यह ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर भी प्रदान करता है। यह लेख खादी ग्रामोद्योग के महत्व, इसके इतिहास, वर्तमान स्थिति, चुनौतियों और भविष्य की संभावनाओं पर विस्तार से प्रकाश डालता है।

खादी ग्रामोद्योग का इतिहास

खादी ग्रामोद्योग का इतिहास भारत के स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ा हुआ है। महात्मा गांधी ने खादी को स्वदेशी आंदोलन का प्रतीक बनाया और इसे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने का एक साधन माना। गांधीजी का मानना था कि खादी न केवल स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देगी, बल्कि यह ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर भी प्रदान करेगी। उन्होंने खादी को "स्वराज्य की आत्मा" कहा और इसे ग्रामीण विकास का एक महत्वपूर्ण साधन माना।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, खादी ने भारतीयों को एकता और स्वावलंबन का संदेश दिया। गांधीजी ने लोगों से आह्वान किया कि वे विदेशी कपड़ों का बहिष्कार करें और खादी पहनें। इससे न केवल स्वदेशी उद्योगों को बढ़ावा मिला, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर भी सृजित हुए।

स्वतंत्रता के बाद, भारत सरकार ने खादी ग्रामोद्योग को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं शुरू कीं। 1956 में खादी और ग्रामोद्योग आयोग (KVIC) की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य खादी और ग्रामोद्योग को बढ़ावा देना और ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर सृजित करना था। KVIC ने खादी उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं शुरू कीं और ग्रामीण क्षेत्रों में खादी उत्पादन केंद्र स्थापित किए।

खादी ग्रामोद्योग का महत्व

खादी ग्रामोद्योग का महत्व निम्नलिखित बिंदुओं से समझा जा सकता है:

1. रोजगार सृजन:

खादी ग्रामोद्योग ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर प्रदान करता है। यह ग्रामीण युवाओं, महिलाओं और कमजोर वर्गों के लिए रोजगार के अवसर सृजित करता है। खादी उत्पादन केंद्रों में काम करने वाले लोगों को न केवल आय प्राप्त होती है, बल्कि उन्हें कौशल विकास के अवसर भी मिलते हैं। उदाहरण के लिए, बिहार और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में खादी उत्पादन केंद्रों ने हजारों लोगों को रोजगार प्रदान किया है।

2. स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा :

खादी ग्रामोद्योग स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देता है। यह भारतीय संस्कृति और परंपरा को संरक्षित करने में मदद करता है। खादी उत्पादों की मांग बढ़ने से स्वदेशी उद्योगों को बढ़ावा मिलता है और आयात पर निर्भरता कम होती है। उदाहरण के लिए, खादी कपड़े, खादी बैग, और खादी सौंदर्य प्रसाधन जैसे उत्पादों ने बाजार में अपनी पहचान बनाई है।

3. पर्यावरण अनुकूल :

खादी उत्पादन प्रक्रिया पर्यावरण अनुकूल है। खादी उत्पादों का निर्माण हाथ से किया जाता है और इसमें कम ऊर्जा की खपत होती है। यह पर्यावरण को प्रदूषित करने वाले रसायनों और मशीनों का उपयोग नहीं करता है। इस प्रकार, खादी ग्रामोद्योग पर्यावरण संरक्षण में भी योगदान देता है। उदाहरण के लिए, खादी कपड़े बनाने में प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया जाता है, जो पर्यावरण के लिए हानिकारक नहीं होते हैं।

4. ग्रामीण विकास :

खादी ग्रामोद्योग ग्रामीण विकास को बढ़ावा देता है। यह ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियों को बढ़ाता है और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाता है। खादी उत्पादन केंद्रों की स्थापना से ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे का विकास होता है और लोगों की जीवन स्तर में सुधार होता है। उदाहरण के लिए, गुजरात और महाराष्ट्र जैसे राज्यों में खादी उत्पादन केंद्रों ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

5. सामाजिक समानता :

खादी ग्रामोद्योग सामाजिक समानता को बढ़ावा देता है। यह ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं, दलितों और अन्य कमजोर वर्गों के लिए रोजगार के अवसर प्रदान करता है। इससे सामाजिक समानता बढ़ती है और लोगों के बीच आर्थिक असमानता कम होती है। उदाहरण के लिए, केरल और तमिलनाडु जैसे राज्यों में खादी उत्पादन केंद्रों ने महिलाओं को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है

खादी ग्रामोद्योग की वर्तमान स्थिति

वर्तमान में, खादी ग्रामोद्योग भारत में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। KVIC और अन्य संगठनों ने खादी उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं शुरू की हैं। खादी उत्पादों की मांग बढ़ने से ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर सृजित हुए हैं और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने में मदद मिली है।

हालांकि, खादी ग्रामोद्योग को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इनमें से कुछ प्रमुख चुनौतियां निम्नलिखित हैं:

1. प्रतिस्पर्धा :

खादी उत्पादों को बाजार में मशीन से बने उत्पादों से प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है। मशीन से बने उत्पाद सस्ते और जल्दी उपलब्ध होते हैं, जबकि खादी उत्पादों का निर्माण हाथ से किया जाता है और इसमें अधिक समय लगता है।

2. विपणन :

खादी उत्पादों का विपणन एक बड़ी चुनौती है। खादी उत्पादों को बाजार में पहुंचाने के लिए प्रभावी विपणन रणनीतियों की आवश्यकता है। अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों में विपणन सुविधाओं की कमी है, जिससे खादी उत्पादों की बिक्री प्रभावित होती है।

3. कौशल विकास :

खादी उत्पादन में कौशल विकास की आवश्यकता है। अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों के पास खादी उत्पादन के लिए आवश्यक कौशल की कमी है। इसके लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता है।

4. वित्तीय सहायता :

खादी ग्रामोद्योग को वित्तीय सहायता की आवश्यकता है। अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों के पास खादी उत्पादन के लिए आवश्यक पूंजी की कमी है। इसके लिए सरकार और वित्तीय संस्थानों से वित्तीय सहायता की आवश्यकता है।

खादी ग्रामोद्योग की भविष्य की संभावनाएं

खादी ग्रामोद्योग की भविष्य की संभावनाएं उज्ज्वल हैं। सरकार और अन्य संगठनों ने खादी उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं शुरू की हैं। इन योजनाओं के माध्यम से खादी उत्पादों की मांग बढ़ने की संभावना है और ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर सृजित होंगे।

खादी ग्रामोद्योग को बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए जा सकते हैं:

1. प्रशिक्षण कार्यक्रम : खादी उत्पादन में कौशल विकास के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किए जाने चाहिए। इन कार्यक्रमों के माध्यम से ग्रामीण युवाओं और महिलाओं को खादी उत्पादन के लिए आवश्यक कौशल प्रदान किया जा सकता है।

2. विपणन सुविधाएं :

खादी उत्पादों के विपणन के लिए प्रभावी रणनीतियों की आवश्यकता है। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और सोशल मीडिया के माध्यम से खादी उत्पादों को बाजार में पहुंचाया जा सकता है। इसके अलावा, खादी उत्पादों के लिए विशेष दुकानें और प्रदर्शनी आयोजित की जा सकती हैं।

3. वित्तीय सहायता :

खादी ग्रामोद्योग को वित्तीय सहायता की आवश्यकता है। सरकार और वित्तीय संस्थानों को खादी उत्पादन के लिए ऋण और अनुदान प्रदान करना चाहिए। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में खादी उत्पादन केंद्र स्थापित करने में मदद मिलेगी।

4. जागरूकता अभियान :

खादी उत्पादों के महत्व के बारे में जागरूकता अभियान चलाए जाने चाहिए। इन अभियानों के माध्यम से लोगों को खादी उत्पादों के फायदों के बारे में जागरूक किया जा सकता है और उन्हें खादी उत्पादों को खरीदने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

खादी और ग्रामोद्योग की प्रासंगिकता

खादी और ग्रामोद्योग, दोनों में ही अधिक लागत की आवयकता होती है। औद्योगिकीकरण के मद्देनजर और लगभग सभी देश का मशीनीकरण होने के कारण भारत जैसे देश के खादी और ग्रामोद्योग की भूमिका और अधिक बढ़ जाती है। खादी और ग्रामोद्योग का एक अलग लाभ यह भी है इन्हें करने के लिए पूँजी की आवश्यकता नहीं (बिल्कुल कम) के बराबर होती है। कम आय और मशीनीकरण/नगरीय असमानता के मद्देनजर भारत के संदर्भ में इसका महत्व और अधिक बढ़ जाता है।

बिहार में खादी का वर्तमान भूमिका

बिहार में खादी क्षेत्र का विकास राज्य के संपूर्ण विकास के लिए खास अहम है। क्योंकि राज्य की अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान है और इसकी अधिकांश आबादी गांवों में रहती है । उन ग्रामीण क्षेत्रों में खादी एवं ग्रामोद्योग गतिविधियों के लिए व्यापक असर एवं संभावनाएं हैं, क्योंकि इस कार्य में सरल तकनीक एवं न्यूनतम पूंजी निवेश की आवश्यकता होती है। विशेष रूप से समाज के कमजोर वर्गों और महिलाओं के बीच रोजगार पैदा करने की इसमें क्षमता है। इसलिए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की अगुवाई वाली बिहार सरकार ने खादी एवं ग्रामोद्योग प्रक्षेत्र के विकास पर पूरा ध्यान दिया है।

वर्तमान में बिहार में कुल 82 खड़ी संस्थाए कार्यरत हैं, जिन्हें वित्तीय लाभ प्रदान करने के लिए बिहार राज्य खादी ग्रामोद्योग बोर्ड के माध्यम से करीब 44 करोड रुपए की लागत से खादी पुर्नरुद्धार योजना शुरू की गई है। इस योजना अंतर्गत नई तकनीक से विकसित हजारों मल्टी काउंटर त्रिपुरारी मॉडल, न्यू मॉडल एवं कटिया चरखा का वितरण खादी संस्थाओं के बीच किया गया है । साथ ही उन्हें कार्यशील पूंजी भी उपलब्ध कराई जा रही है।खादी एवं ग्रामोद्योग क्षेत्र के समग्र विकास और ग्रामीण जनता को सतत रोजगार करने के लिए खादी कारीगर की उत्पादकता और प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ावा दिया जा रहा है । खादी बोर्ड संस्थाओं के लिए सुविधा प्रदाता की भूमिका निभाने के साथ-साथ उनके उत्पादों के बेहतर विपणन के लिए मार्गदर्शन का भी काम कर रहा है।

बिहार राज्य खादी बोर्ड द्वारा पटना में निर्मित खादी मॉल ने कोरोना काल की मंदी के बावजूद रिकॉर्ड बिक्री दर्ज की है। खादी मॉल पटना की सफलता से प्रेरित होकर उद्योग विभाग ने राज्य के नौ अन्य बड़े शहरों में भी खादी मॉल बनाने का आदेश दिया गया है। गया पूर्णिया, मुजफ्फरपुर ,दरभंगा,भागलपुर और छपरा में मॉल निर्माण की दिशा में कार्रवाई प्रारंभ कर दी गई है । उद्योग विभाग ने बिहार राज्य खादी ग्राम उद्योग संघ सर्वोदय ग्राम मुजफ्फरपुर की मधुबनी जिला अंतर्गत झंझारपुर में लघु खादी मॉल निर्माण हेतु पटना द्वारा तकनीकी अनुमोदित प्राक्कलन की कुल अनुमानित राशि 4,97,32,887.00 रुपए मात्र की प्रशासनिक स्वीकृति दी गई है ।

खादी एवं ग्रामोद्योग इकाइयों को क्लस्टर आधारित पद्धति से सार्वजनिक सुविधा देने के लिए मुख्यमंत्री क्लस्टर योजना के तहत मधुबनी के राजनगर प्रखंड में सामान्य सुविधा केंद्र का निर्माण प्रस्तावित है। इस केंद्र में कच्चे माल , धागे की उपलब्धता, कौशल उन्नयन के लिए प्रशिक्षण, गुणवत्ता नियंत्रण, जांच सुविधाएं, विपणन संवर्धन, रंगाई-छपाई, पैकेजिंग तथा डिजाइन इत्यादि की सुविधा दी जाएगी।

बोर्ड द्वारा खादी उत्पादों को "बिहार खादी" नाम के अधीन बेचने की पहल की गई है और उपभोक्ताओं के हर वर्ग तक पहुंच बनाने के लिए बिहार खादी का अपना ई-कॉमर्स प्लेटफार्म विकसित किया गया है । पटना में एक आकर्षक "मोबाइल सेल्स-वैन" की सेवा प्रारंभ की गई है, जिसके माध्यम से खादी और ग्रामोद्योग उत्पादों की बिक्री की जा रही है। बोर्ड निरंतर प्रयासरत है कि अपने ब्रांड संवर्धन गुणवत्ता नियंत्रण और मानकीकरण की निवीष्टयो के समुचित उपयोग के माध्यम से प्रतिस्पर्धी मूल्य पर गुणवत्ता युक्त उत्पादों को ग्राहकों तक पहुंच सके।

इसके लिए राज्य के कतिनों और बुनकरों को डिजाइन,रंगाई और छपाई का प्रशिक्षण दिया जा रहा है ताकि वे बाजार की मांग के अनुरूप खादी वस्त्रो का उत्पादन कर सके।

उम्मीद है कि विगत वर्षों के दौरान प्रारंभ की गई इन नई योजनाओं के कारण बिहार का खादी एवं ग्रामोद्योग क्षेत्र सफलता की नई ऊंचाइयों को छूएगा और आने वाले वर्षों में रोजगार सृजन के क्षेत्र में सराहनीय भूमिका निभाएगा।

निष्कर्ष

खादी ग्रामोद्योग भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने और ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर सृजित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह न केवल स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देता है, बल्कि यह पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक समानता को भी बढ़ावा देता है। हालांकि, खादी ग्रामोद्योग को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, लेकिन सरकार और अन्य संगठनों के प्रयासों से इन चुनौतियों को दूर किया जा सकता है। भविष्य में, खादी ग्रामोद्योग की संभावनाएं उज्ज्वल हैं और यह ग्रामीण विकास और रोजगार सृजन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

संदर्भ (References)

1. खादी और ग्रामोद्योग आयोग (KVIC) की आधिकारिक वेबसाइट: https://www.kvic.org.in

2. महात्मा गांधी और खादी: स्वदेशी आंदोलन का इतिहास।

3. भारत सरकार की योजनाएं: खादी ग्रामोद्योग को बढ़ावा देने के लिए।

4. पर्यावरण अनुकूल उत्पादन: खादी की भूमिका।

5. ग्रामीण विकास और रोजगार सृजन: खादी ग्रामोद्योग का योगदान।

6. आर्यावर्त, पटना संस्करण औद्योगिक विकास विभाग प्रतिवेतन ।